



---

.. Shri Yogaminakshi Stotram ..

॥ श्रीयोगमीनाक्षीस्तोत्रम् ॥

Sanskrit Document Information



---

Text title : yogamInAkShi stotra

File name : yogamInAkShI.itx

Location : doc\_devii

Language : Sanskrit

Subject : philosophy/hinduism/religion

Transliterated by : N.Balasubramanian bbalu at sify.com

Proofread by : N.Balasubramanian, K Kalyanaraman srimatha12 at gmail.com

Latest update : June 25, 2012, October 26, 2016

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

Site access : <http://sanskritdocuments.org>

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

---


**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

October 25, 2016

*sanskritdocuments.org*

---



## ॥ श्रीयोगमीनाक्षीस्तोत्रम् ॥

शिवानन्दपीयूषरत्नाकरस्थां शिवब्रह्मविष्णवामरेशाभिवन्द्याम् ।  
शिवध्यानलगां शिवज्ञानमूर्तिं शिवाख्यामतीतां भजे पाण्ड्यबालाम् ॥ १ ॥

शिवादिस्फुरत्पञ्चमञ्चाधिरूढां धनुर्बाणपाशाङ्कुशोत्भासिहस्ताम् ।  
नवीनार्कवर्णां नवीनेन्दुचूडां परब्रह्मपत्नीं भजे पाण्ड्यबालाम् ॥ २ ॥

किरीटाङ्गदोद्भासिमाङ्गल्यसूत्रां स्फुरन्मेखलाहारताटङ्गभूषाम् ।  
परामन्त्रकां पाण्ड्यसिंहासनस्थां परन्धामरूपां भजे पाण्ड्यबालाम् ॥ ३ ॥

ललामाञ्चितस्निग्धफालेन्दुभागां लसन्नीरजोत्फुल्लकल्हारसंस्थाम् ।  
ललाटेक्षणार्धाङ्गलग्नोज्वलाङ्गीं परन्धामरूपां भजे पाण्ड्यबालाम् ॥ ४ ॥

त्रिखण्डात्मविद्यां त्रिबिन्दुस्वरूपां त्रिकोणे लसन्तीं त्रिलोकावनम्राम् ।  
त्रिबीजाधिरूढां त्रिमूर्त्यात्मविद्यां परब्रह्मपत्नीं भजे पाण्ड्यबालाम् ॥ ५ ॥

सदा बिन्दुमध्योल्लसद्वेणिरम्यां समुत्तुङ्गवक्षोजभारावनम्राम् ।  
ऋणभूपुरोपेतलाक्षारसार्द्रस्फुरत्पादपद्मां भजे पाण्ड्यबालाम् ॥ ६ ॥

यमाद्यष्टयोगाङ्गरूपामरूपामकारात्क्षकारान्तवर्णमिवर्णाम् ।  
अखण्डामनन्यामचिन्त्यामलक्ष्याममेयात्मविद्यां भजे पाण्ड्यबालाम् ॥  
७ ॥

सुधासागरान्ते मणिद्वीपमध्ये लसत्कल्पवृक्षोज्वलद्विन्दुचक्रे ।  
महायोगपीठे शिवाकारमञ्चे सदा सन्निषण्णां भजे पाण्ड्यबालाम् ॥ ८ ॥

सुषुम्नान्तरन्ध्रे सहस्रारपद्मे रवीन्द्रग्रिसम्युक्तचिच्चक्रमध्ये ।  
सुधामण्डलस्थे सुनिर्वाणापीठे सदा सञ्चरन्तीं भजे पाण्ड्यबालाम् ॥ ९ ॥

षडन्ते नवान्ते लसद्द्वादशान्ते महाबिन्दुमध्ये सुनादान्तराले ।  
शिवाख्ये कलातीतनिश्शब्ददेशे सदा सञ्चरन्तीं भजे पाण्ड्यबालाम् ॥  
१० ॥

चतुर्मार्गमध्ये सुकोणान्तरङ्गे खरन्ध्रे सुधाकारकूपान्तराले ।  
निरालम्बपद्मे कलाषोडशान्ते सदा सञ्चरन्तीं भजे पाण्ड्यबालाम् ॥ ११ ॥

पुटद्वन्द्वनिर्मुक्तवायुप्रलीनप्रकाशान्तराले ध्रुवोपेतरम्ये ।  
महाषोडशान्ते मनोनाशदेशे सदा सञ्चरन्तीं भजे पाण्ड्यबालाम् ॥ १२ ॥

चतुष्पत्रमध्ये सुकोणत्रयान्ते त्रिमूर्त्याधिवासे त्रिमार्गान्तराळे ।  
सहस्रारपद्मोचितां चित्रकाशप्रवाहप्रलीनां भजे पाण्ड्यबालाम् ॥ १३ ॥  
लसद्द्वादशान्तेन्दुपीयूषधारावृतां मूर्तिमानन्दमग्रान्तरङ्गाम् ।  
परां त्रिस्तनीं तां चतुष्कूटमध्ये परन्धामरूपां भजे पाण्ड्यबालाम् ॥ १४ ॥  
सहस्रारपद्मे सुषुम्नान्तमार्गे स्फुरच्चन्द्रपीयूषधारां पिबन्तीम् ।  
सदा स्रावयन्तीं सुधामूर्तिमम्बां परञ्ज्योतिरूपां भजे पाण्ड्यबालाम् ॥  
१५ ॥  
नमस्ते सदा पाण्ड्यराजेन्द्रकन्ये नमस्ते सदा सुन्दरेशाङ्गवासे ।  
नमस्ते नमस्ते सुमीनाक्षि देवि नमस्ते नमस्ते पुनस्ते नमोऽस्तु ॥ १६ ॥

---

Encoded N.Balasubramanian bbalu@sify.com

Proofread by N.Balasubramanian, K Kalyanaraman  
srimatha12 at gmail.com

---

.. Shri Yogaminakshi Stotram ..

was typeset using Xe<sub>La</sub>TeX 0.99996

on October 25, 2016

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

